31

बाइबल की सबसे अच्छी और सबसे बुरी खबर

(7:14-25)

हम ''पवित्रीकरण'' (इस पुस्तक में आगे मिलता है) पर रूपरेखा के अपने भाग को समाप्त करने को तैयार हैं। ''धर्मी ठहराया जाना'' पर पिछले भाग में पौलुस ने कहा कि व्यवस्था धर्मी नहीं ठहरा सकती। रोमियों 7 का अन्तिम भाग यह दिखाता है कि व्यवस्था पवित्र नहीं कर सकती।

यह पाठ 7:14-25 के हमारे अध्ययन का दूसरा भाग है। यहां हम 15 से 25 आयतों पर ज़ोर देंगे जो पौलुस के भलाई करने के संघर्ष को और ऐसा करने में उसकी असफलता को दिखाता है। कई लोग पौलुस की घबराहट को अपने साथ मिलाते हैं। गायक जॉनी कैश ने एक बार एक एलबम रिकॉर्ड की जिसके कवर पर दो कुज़े दिखाए गए थे। एक कुज़ा काला था जिस पर सफ़ेद धारियां थीं और दूसरा कुज़ा सफेद था, जिस पर काली धारियां थीं। एक साक्षात्कार में कैश ने कहा कि दोनों कुज़े उसका प्रतिनिधित्व करते हैं: ''जब मैं सचमुच बुरा था, तो मैं पूरी तरह से बुरा नहीं था। जब मैं अच्छा बनने की कोशिश कर रहा था तो मैं पूरी तरह से अच्छा कभी नहीं बन पाया।''[1] हम में से अधिकतर लोग उस व्यज़्ति के साथ सहानुभूति कर सकते हैं जिसने कहा, ''काश मैं हर समय उतना अच्छा हो सकता जितना मैं कभी-कभी होता हूं।''[2]

मैं इस पाठ का नाम ''बाइबल की सबसे बुरी और सबसे अच्छी खबर'' रख रहा हूं। बाइबल की सबसे बुरी खबर यह है कि मसीह के बिना जीवन आशाहीन है (देखें आयत 24)। सबसे अच्छी खबर यह है कि मसीह हमें उस आशाहीन स्थिति से बचाने के लिए मरा (देखें आयत 25क)!

सबसे बुरी खबर (7:14-24)

उलझन और अंगीकार (आयतें 14-17)

आयत 14 में पौलुस ने व्यवस्था के ''आत्मिक'' और अपने आप के ''शारीरिक'' होने का अन्तर बताया। आयत 15 में उसने व्यवस्था के अधीन अपनी असहाय स्थिति का वर्णन आरज़्भ किया: ''जो मैं करता हूं[3] उसको नहीं जानता; जो मैं चाहता हूं वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है वही करता हूं।'' अनुवादित शज़्द ''जानता'' *ginosko* से लिया गया है। बेशक परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ मसीही लेखक पौलुस जानता (समझता) था कि समस्या ज़्या है, परन्तु वह सज़्भवतया अपने बीते दिनों की तस्वीर दिखा रहा था जिसमें वह शरीर में बंधा, व्यवस्था के अधीन गैर मसीही यहूदी था। *यानी* पौलुस उलझन में और घबराहट में था ज़्योंकि वह सचमुच वह करना *चाहता था* जिसकी व्यवस्था आज्ञा देती थी, परन्तु इसके बजाय वह वही करता था जो

व्यवस्था *नहीं* करने को कहती थी (देखें आयतें 7ख, 8)।

पौलुस ने ध्यान दिया कि यह व्यवस्था की भलाई का प्रमाण था: "यदि [ज़्योंकि][4], जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि व्यवस्था भली है" (आयत 16)। इस आयत में पौलुस का तर्क इतना संक्षिप्त है कि एक दम से लग सकता है कि यह स्पष्ट नहीं है। उसके विचार को विस्तार देने पर कुछ इस प्रकार लग सकता है: "व्यवस्था मुझे कहती है कि कुछ काम है जो नहीं करने चाहिए। मैं व्यवस्था की बात का उल्लंघन नहीं चाहता, परन्तु मैं अपने आपको 'वही काम जो मैं नहीं करना चाहता' करते हुए पाता हूं। जब मैं ऐसा करता हूं तो मुझे गलती का अहसास होता है। तथ्य यह है कि मेरा अपने आपको गलत मानना इस बात का प्रमाण है कि 'मैं व्यवस्था की बात से सहमत हूं' कि मेरा वह काम गलत है। इस प्रकार एक अर्थ में मैं 'यह मानता हूं कि व्यवस्था' जो कुछ कहती है वह बिल्कुल सही है। यानी बिना किसी संदेह के 'अच्छे' है।"

"भली" का अनुवाद *kalos* से किया गया है जो उसका संकेत देता है जो "नैतिक दृष्टि से अच्छा, सही, शानदार, सज़्माननीय" हो।[5] पौलुस के अंगीकार में इस अन्तर का संकेत है कि "व्यवस्था तो अच्छी है, परन्तु *मैं* नहीं।"

पौलुस व्यवस्था की बात मानने के अयोग्य *ज़्यों* था? ज़्योंकि वह पाप के हाथ बिका हुआ था (आयत 14)। पाप उससे अधिक शज़्तिशाली था। "तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है" (आयत 17)। "बसा हुआ" का अनुवाद *oikeo* से किया गया है जिसका अर्थ अपना निवास बनाना, "अपना निवास होना" या घर [बनाना][6] है। पाप (मूर्तिमान होकर) पौलुस के जीवन में चला गया था और उस पर हावी हो गया था।

हमारे वचनपाठ की कई आयतों को यदि संदर्भ से निकाल दिया जाए तो लगता है जैसे पौलुस अपने पाप की ज़िज़्मेदारी से मुकर रहा हो। आयत 17 उन में से एक है। आयत 20 दूसरी है: "यदि मैं वही करता हूं जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।" शेष पद्य से अलग होकर इन आयतों की भावना घिसे-पिटे बहाने जैसी लगती है कि "मैं बेबस था; शैतान ने मुझ से करवा दिया!"

परन्तु पौलुस ने व्यज़्तिगत ज़िज़्मेदारी को पहले ही स्वीकार कर लिया था। आयत 15 में दो बार उसने जो "मैं *करता हूं*" कहा। आयत 16 में उसने कहा, "जो *मैं* नहीं चाहता वही करता।" रोमियों की पूरी पुस्तक में उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि अपने पापपूर्ण कार्यों के लिए पापी ही ज़िज़्मेदार *है* और उनका हिसाब उसे परमेश्वर को देना होगा (देखें 2:6; 14:12)। तो फिर इसका ज़्या *अर्थ* था जो उसने कहा, "तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है"?

इससे यह देखने के लिए कि आयत 17 में "मेरी" का ज़्या अर्थ है अगली आयत में झांकने में सहायता मिल सकती है: "*मेरे शरीर में* कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती" (7:18क)। अगली आयतों में पौलुस ने अपने उस भाग में जो "भलाई करना" चाहता था (आयत 21) को अपने उस भाग से अलग किया जो "पाप की व्यवस्था" के अधीन था (आयत 23)। पहले भाग को उसने "भीतरी मनुष्यत्व" (आयत 22) और अपनी "बुद्धि" (आयतें 23, 25) कहा। दूसरे भाग में "मेरे शरीर" (आयतें 18, 25), "अपने अंगों" (आयत 23) और "इस मृत्यु की देह" (आयत 24) सहित कई नाम हैं। उसने अपने आप में इन दोनों भागों के बीच होने वाले युद्ध के बीच की कल्पना

की (आयत 23)। हम इस लड़ाई को भीतरी मनुष्य (आत्मा [मनुष्य की]) और बाहरी मनुष्य (शरीर) के बीच के युद्ध के रूप में मान सकते हैं।[7]

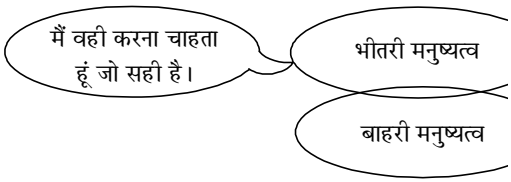

ज़्या पौलुस के समझाने का उद्देश्य यह था कि बाहरी मनुष्य जब पाप करता है तो इसका दोषी भीतरी मनुष्य होता है: नहीं? यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे काम (यानी मनुष्य के बाहरी काम) मन (अर्थात भीतरी मनुष्य) से निकलते हैं (मत्ती 15:18-20)। पौलुस ने इस बात को समझा कि भीतरी मनुष्यत्व और बाहरी मनुष्यत्व दोनों *उसी के* अंग हैं (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:23) और दोनों की ज़िम्मेदारी *उसी* पर है।

इस पद्य में भीतरी/बाहरी शब्दावली का इस्तेमाल यह कहने का नाटकीय ढंग था कि "मेरे लिए व्यवस्था को पूर्णतया मानना *असम्भव* था। मैं चाहे *कितनी भी* कोशिश करूं मेरा यह भाग जो कमज़ोर है मुझे नीचे को खींचता है।" मुझे CJB का पौलुस के विचार को व्यक्त करने का ढंग पसन्द है। इसमें आयत 17 को इस प्रकार अनुवाद किया गया है: "परन्तु अब इसे करने वाला 'वास्तविक मैं' नहीं, बल्कि मेरे भीतर बसा हुआ पाप है।" "वास्तविक मैं" पौलुस का वह भाग था जो भलाई करना चाहता था। मैं उसी शब्दावली को लेकर "वास्तविक" पौलुस की बात कर पाठ में आगे बढ़ता रहूंगा।

चुनौती और चिंता (आयतें 18-20)

पौलुस ने आगे कहा, "ज़्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती" (आयत 18क)। उसके शरीर में "कोई अच्छी *बात नहीं*" थी? पौलुस ने इतनी उग्र भाषा का इस्तेमाल ज़्यों किया? शायद वह "अच्छी" का इस्तेमाल "*पूर्णतया* अच्छा, अर्थात हर अर्थ में अच्छा" के अर्थ में कर रहा था (देखें लूका 18:19)। "वास करती" वर्तमानकाल में है (जो निरन्तर क्रिया का संकेत है), इसलिए हो सकता है कि पौलुस यह कह रहा हो कि उसके शरीर में भलाई *सदा* विद्यमान नहीं रहती थी। सम्भवतया वह "शरीर" के नीचे की ओर खींचने के मोहक स्वभाव पर ज़ोर देने के लिए केवल अतिश्योक्ति का इस्तेमाल कर रहा था। अतिश्योक्ति किसी बात पर ज़ोर देने के लिए एक न्यायसंगत ढंग है (देखें यूहन्ना 21:25)। माताएं बच्चों को आम तौर पर कहती हैं, "मैंने तुझे *हज़ार बार* कहा कि ऐसा मत करना।"

हमें यह ध्यान देने के लिए कि आयत 18 में पौलुस की शिक्षा को "शरीर के" नास्तिक विचार की शिक्षा के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। जैसा कि " 'शरीर' (*Sarx*) पर एक शब्द अध्ययन" में कहा गया है कि नास्तिकों का मानना है कि शरीर में बुराई समाहित है, जिसके परिणामस्वरूप वे लोग यह ज़ोर देते हैं कि मसीह देह में *नहीं* आ सकता था। वे यह भी सिखाते थे कि पापपूर्ण शरीर या देह द्वारा किए गए काम के लिए आत्मा जिम्मेदार नहीं है। पौलुस यह नहीं मानता था। वह सिखाता था कि पवित्र आत्मा की सहायता से, शरीर (या देह) की पापपूर्ण

प्रवृज़ियों पर विजय पाई जा सकती है (देखें 8:13)। उसने अपने पाठकों को अपने शरीर के अंगों को "धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को" सौंपने की चुनौती दी (6:13; देखें 12:1)।

परन्तु 7:18 में पौलुस के मन में परमेश्वर के आत्मा की सहायता *के बिना* शरीर से लड़ने की चुनौती दी। उन परिस्थितियों में शरीर नीचे की ओर खींचने वाली शज़्ति से कट जाता। पौलुस के लिए इसका ज़्या परिणाम है? उसने कहा, "[भला करने की] इच्छा तो मुझ [वास्तविक 'मैं'] में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते" (आयत 18ख)। अगली आयत में उसने कहा, "ज़्योंकि जिस अच्छे काम की इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता" (आयत 19क)।

एक मिनट रुकना! यह *पौलुस* ही कह रहा है। *पौलुस* कोई भला काम करने के अयोग्य था? यीशु के बाद सज़्भवतया भलाई करने वाला मनुष्य शायद वही था! वास्तव में रोमियों 7 के लिखे जाने के समय जो कुछ वह कर रहा था, उस पर विचार करें:

> राहत की भेंट लेकर अन्यजाति कलीसियाओं के भेजे हुए लोगों के साथ यरूशलेम जाने के लिए अन्यजातियों को कलीसियाओं के भेजे हुए लोगों के साथ जाकर वह अपने प्राण को जोखिम में डालने की तैयारी कर रहा था। स्पेन के अपने प्रस्तावित सुसमाचार प्रचार के काम के लिए वह रोमी कलीसिया की सहायता का नाम लिखना चाह रहा था। परन्तु वह यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को जो पहले कभी नहीं लिखा गया था, सबसे गज़्भीर व्याज़्या लिखवा रहा था।[8]

अपनी बात कहने के लिए पौलुस ठीक से अत्युज़्ति का इस्तेमाल कर रहा था। वह *कुछ* भलाई करता था, परन्तु जितनी भलाई वह चाहता था *उतनी* नहीं कर पाता था। इसके अलावा उसकी की हुई हर भलाई में कुछ न कुछ कमी रहती है। शरीर के कारण उसके "काम" में उसकी इच्छा से कमी रह ही जाती थी।[9]

इस प्रकार उसने अपने आपको भलाई करने के मामले में पूरी तरह से असफल दिखाया: "ज़्योंकि जिस अच्छे काम की इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं" (आयत 19)। फिर उसने कहा, "परन्तु यदि [ज़्योंकि] मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं ['वास्तविक' पौलुस] न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ [यानी मेरे शरीर में] है" (आयत 20)।

निष्कर्ष और झगड़ा (आयतें 21-23)

21 से 23 आयतों में पौलुस ने अपने भीतरी संघर्ष की चर्चा जारी रखी:

> सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है। ज़्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।

इन आयतों की समीक्षा करने से पहले मुझे आयत 21 में "व्यवस्था" शज़्द और अगली

आयतों में इससे जुड़े शब्दों पर टिप्पणी देनी चाहिए। ''व्यवस्था'' का अनुवाद *nomos* से किया गया है। आयत 22 में भी *nomos* का इस्तेमाल एक बार हुआ है जहां इसका अर्थ ''परमेश्वर की व्यवस्था'' है। फिर आयत 23 में इसका इस्तेमाल तीन बार ''दूसरे प्रकार की व्यवस्था,'' ''मेरी बुद्धि की व्यवस्था'' और ''पाप की व्यवस्था'' के अर्थ में हुआ है। आयत 25 में यह ''परमेश्वर की व्यवस्था'' और ''पाप की व्यवस्था'' के रूप में दो बार मिलता है। 8:2, 3, 4 और 7 में यही शब्द मिलता है।

इनमें से कुछ स्पष्टतया परमेश्वर की व्यवस्था, विशेषकर मूसा की व्यवस्था की बात करते हैं (7:22, 25); परन्तु 7:21 में ''व्यवस्था'' और आयत 23 में बहु ''व्यवस्थाओं'' का क्या अर्थ है? इस शृंखला में पहले '' 'व्यवस्था' (*Nomos*) पर एक शब्द अध्ययन'' मैंने सात अलग-अलग ढंग बताए थे, जिनमें रोमियों की पुस्तक में *nomos* का इस्तेमाल हुआ था। उस सूची का एक संक्षिप्त सार इस प्रकार है:

Nomos के अर्थ या उपयोग

1. तौरेत, अर्थात पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकें।
2. सामान्य रूप में पुराना नियम।
3. लिखित हो या अलिखित, परमेश्वर का प्रकाशन।
4. एक विशेष कानूनी शर्त।
5. एक कानूनी प्रबन्ध।
6. एक सामान्य नियम।
7. एक स्थापित प्रवृत्ति, ''कार्य करने के लिए विवश करने वाला बल या प्रभाव।''

अन्तिम दो ढंगों का सम्बन्ध ''सामान्य नियम'' या ''स्थापित प्रवृत्ति'' (जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम) का संकेत देते हुए *गौण* अर्थ में *नोमोस* के इस्तेमाल से है। जैसा कि NASB संकेत देता है, ''principle'' आयत 21 में *नोमोस* के अर्थ को व्यक्त करता है। स्थापित प्रवृत्ति भी आयत 23 में *नोमोस* का सामान्य विचार है और आयत 25 में उल्लेख दूसरी ''व्यवस्था।''

यह ध्यान रखते हुए कि *नोमोस* का इस्तेमाल कई अर्थों में हो सकता है, आइए अब 21 से 23 आयतों को देखते हैं। 14 से 20 आयतों में समीक्षा करते हुए पौलुस इस निष्कर्ष पर पहुंचा: ''मैं यह व्यवस्था [*nomos*] पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं [वास्तविक मैं], तो बुराई मेरे पास आती है'' (आयत 21)। बेशक वह भलाई करना चाहता था परन्तु बुराई उसके साथ रहती थी। वह उसे अकेला नहीं छोड़ती थी (देखें 1 पतरस 5:8), परन्तु जो भलाई वह करना चाहता था उसे वह करने से रोकती थी (आयतें 18, 19)।

अब उसने अपने आप को एक बड़े संघर्ष में पाया। एक ओर तो वह कह सकता था कि ''क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं'' (आयत 22)। ''वास्तविक'' पौलुस भजन लिखने वाले के साथ कह सकता था, ''अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिनभर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है'' (भजन संहिता 119:97)।[10]

दूसरी ओर, पौलुस ने कहा, ''परन्तु मुझे अपने अंगों ['शरीर'] में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है'' (रोमियों 7:23क)। उसके मन में

("भीतरी मनुष्यत्व") की "व्यवस्था" (*nomos*) भलाई करने की इच्छा के लिए उसके मन की "स्थापित प्रवृज़ि" थी। उसका विरोध करने वाली उसके शरीर के अंगों (बाहरी मनुष्यत्व) की "व्यवस्था" थी। आयत 23 और आयत 25 के अन्त में, इस "व्यवस्था" को "पाप की व्यवस्था" कहा गया है।[11] यह बुराई करने की इच्छा की "स्थापित प्रवृज़ि" थी। आयत 23 पढ़ते हुए मुझे एच. जी. वेल्स का एक व्यज़्ति का विवरण स्मरण आता है जो "चलता फिरता गृह युद्ध" था।[12]

इस भयानक लड़ाई का परिणाम ज़्या था। पौलुस ने दुखी होकर कहा, "मुझे [भीतरी मनुष्यत्व] पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों [बाहरी मनुष्यत्व] में है" (आयत 23ख)। पौलुस ("वास्तविक पौलुस") पूरी तरह से हार गया था और बुरी तरह से अपमानित था! अपनी सामर्थ पर भरोसा रखते हुए वह पाप की नीचे की ओर खींचने वाली शज़्ति का सामना नहीं कर सकता था।

विपज़ि और पुकार (आयत 24)

पौलुस से लिया गया हार का कष्ट जिसे रिचर्ड रोजर्स ने बाइबल के सबसे दुखद शज़्दों के रूप में दिखाया।[13] "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (आयत 24)। "अभागा" का अनुवाद *talaiporos* से किया गया है जिसका अर्थ है "दयनीय, दुर्दशाग्रस्त, व्यज़्ति।"[14] इसमें "परिश्रमों और परेशानियों" से थका होने का विचार मिलता है।[15] पौलुस कोशिश न करने के कारण नहीं हारा था। उसने अपनी पूरी कोशिश की थी। उसने चूर-चूर होने तक काम किया था। तौभी वह व्यवस्था का पालन पूरी तरह से नहीं कर पाया था। उसने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी ज़्योंकि उसने पाप किया था। NIrV में उसकी भावनाओं को इस प्रकार व्यज़्त किया गया है: "मैं कितना भयंकर रूप से असफल हूं!"[16]

पौलुस की इस पुकार से कि "मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (आयत 24ख)। हम उसकी निराशा को समझ सकते हैं। ध्यान दें कि पौलुस ने यह नहीं पूछा कि "मुझे *ज़्या* छुड़ाएगा" बल्कि यह पूछा कि "कौन छुड़ाएगा?" अपने आपको छुड़ाने के लिए उसे बेहतर व्यवस्था की आवश्यकता नहीं थी; इस पूरे भाग में उसने व्यवस्था के गुणों की प्रशंसा की थी। न ही "कठिन प्रयास" करने का समाधान था; पौलुस ने बहुत कोशिश की थी और तन मन से की थी, परन्तु वह पाप की कैद में ही था। उसे "इस मृत्यु की देह" से छुड़ाने के लिए, *कौन* यानी *किसी व्यज़्ति* की आवश्यकता थी।

"इस मृत्यु की देह" वाज़्यांश पर टीकाकारों की अलग-अलग व्याज़्याएं हैं।[17] मृत्यु की देह से "छुड़ाने" की आवश्यकता के बारे में कई लोग राजा की प्राचीन कहानी याद दिलाते हैं जो उनके शरीरों के साथ बदबूदार लाशें बांधकर बन्दियों को सताता था।[18] याद रखें कि पौलुस अपने शरीर के अंगों में "पाप की व्यवस्था" की बात कर रहा था (आयत 23)। यह "व्यवस्था" ("बुराई करने की" स्थापित प्रवृज़ि) *आत्मिक मृत्यु* अर्थात परमेश्वर से जुदाई का ही कारण बन सकती है। इस कारण पौलुस ने पुकार की, "मृत्यु के लिए ठहराई गई इस देह से मुझे कौन छुड़ाएगा?" (आयत 24ख; NEB)।

दिल दहला देने वाले दृश्य दिमाग में आते हैं: एक डूब रहा व्यज़्ति बचाव के लिए पुकार रहा है, जल रही इमारत में यह आदमी सहायता की पुकार कर रहा है, बुरी तरह से घायल एक आदमी

राहत की भीख मांग रहा है, कैंसर से मर रहा व्यक्ति शांति के लिए तड़प रहा है। इनमें से किसी की स्थिति की तुलना पाप में खोए व्यक्ति की दिल दहला देने वाली पुकार से नहीं की जा सकती, जिसे अपनी दुविधा का पता है परन्तु उसे यह पता नहीं है कि उम्मीद कहां से आएगी: ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा [कौन छुड़ा *सकता है*]?'' (आयत 24)। पौलुस ने ''बाइबल की सबसे बुरी खबर'' का समापन इस प्रकार किया।

सबसे अच्छी खबर (7:25)

विश्वास फिर से दोहराया गया

यदि दमिश्क के मार्ग पर पौलुस यीशु से न मिला होता तो उसे अपने प्रश्न का कोई उत्तर न मिलता (आयत 24ख), परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसकी भेंट यीशु से हो गई। आयत 25 में हम गहराइयों से उंचाइयों की ओर, बाइबल की सबसे बुरी खबर से सबसे अच्छी खबर की ओर जाते हैं जहां पौलुस अपने ही प्रश्न का उत्तर देता है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो!'' फिर से पौलुस ने अपने विचार को संक्षिप्त कर दिया। इस बात को विस्तार देने पर इस प्रकार पढ़ा जा सकता है, ''परमेश्वर का धन्यवाद हो [वह] हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा छुड़ाए गए हैं'' (देखें CJB; AB; NIrV)। इसे कहने का एक और ढंग है ''परमेश्वर का धन्यवाद हो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ['हम छुड़ाए जा सकते हैं']'' (देखें CEV; फिलिप्स; NLT)। दोनों विस्तार एक ही विचार को दिखाते हैं कि आत्मिक विपत्ति से छुड़ाए जाने की मनुष्यजाति की एकमात्र आशा यीशु के द्वारा परमेश्वर में मिलती है![19]

अपने विजयी विस्मय को जो उसने मन में रखा बताने के लिए पौलुस रुका नहीं; इसे उसने अध्याय 8 में बताया। परन्तु वह हमें उस भोज का स्वाद चखाने से मिलने वाला है। बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है कि ''प्रशंसा का यह आवेग, जो कुछ-कुछ बिजली के प्रहार जैसा लगता है, इस ... अध्याय के अंधकार को छितरा देता है और जो कुछ पौलुस आठवें [अध्याय] में कहने वाला था उसकी थोड़ी देर की थोड़ी सी झलक देता है।''[20]

फिर से बताई गई

आयत 25 का पहला वाक्य पौलुस की चर्चा को समाप्त करने और इस अध्याय का अच्छा अन्त होने के लिए सही होगा। इन शब्दों को पढ़ना थोड़ा आश्चर्य दिलाने वाला है: ''निदान मैं आप [' ''वास्तविक'' मैं '] बुद्धि से [भीतरी मनुष्यत्व] तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से [बाहरी मनुष्यत्व] पाप की व्यवस्था [बुराई करने की 'स्थापित प्रवृत्ति'] का सेवन करता हूं [सेवा करता हूं]'' (आयत 25ख)।

कुछ टीकाकार और अनुवादक इन अनुवादों को बाहरी मानकर उन्हें आयत 24 के अन्त में मिलाते हैं (देखें मोफट; फिलिप्स)। ''परन्तु वचन के इस प्रेषण की सहायता के लिए कोई हस्तलिखित प्रमाण नहीं है।''[21] जॉन. आर. स्टॉट ने लिखा है कि ''आयत 25ख पूरे हस्तलेखों में डटकर खड़ी होती है और हमें इसे मिटाने या हटाने की कोई स्वतन्त्रता नहीं है।''[22]

स्पष्टतया पौलुस मसीह के बिना ही अपनी आत्मिक स्थिति की व्यर्थता की अन्तिम बात

कहना चाहता था। वह व्यवस्था को पूरी तरह से मानने का इच्छुक था परन्तु व्यवस्था उसके मूल स्वभाव को बदल नहीं सकती थी। इसलिए व्यवस्था उसे अपने आप से ही बचा नहीं सकती थी! यह बाइबल की "सबसे बुरी खबर" है जबकि "सबसे अच्छी खबर" यह है कि मसीह उसे और हमें बचाने के लिए आया! इसे हम रोमियों 8 पर अपने पाठों में विस्तार से देखेंगे।

सारांश

रोमियों 7:14-25 में पौलुस की मुख्य बात यह थी कि व्यवस्था के अधीन अर्थात मसीह के बिना मनुष्य की आत्मिक असफलता तय है। व्यवस्था ने न तो पवित्र किया और न कर सकती है। इसी प्रकार सदियों से पौलुस की बातों से पवित्र लोगों और पापियों को सबके मनों को एक समान छुआ। हज़ारों लोगों ने कहा है, "मुझे मालूम है कि उसके कहने का *सही-सही* अर्थ क्या है। मैंने अपने आप में यह भी महसूस किया है!"

अन्त में, मैं पूछना चाहता हूं, "अपने वचनपाठ से हमें कौन से व्यावहारिक सबक लेने चाहिए? कुछ लोग यह सोचते हैं कि मुख्य संदेश यह है कि जीवन आशाहीन है।" वे कहते हैं, "यदि प्रेरित पौलुस नहीं कर पाया तो मैं कोशिश क्यों करूं?" स्पष्टतया उन्होंने आयत 25 के पहले भाग को नहीं समझा। यह सच है कि *मसीह के बिना* जीवन आशाहीन है, परन्तु उसके द्वारा सब कुछ सम्भव है (फिलिप्पियों 4:13; देखें मरकुस 10:27)!

फिर वे लोग हैं जो इस पद्य का इस्तेमाल मसीही जीवन जीने के अपने आधे अधूरे प्रयासों को उचित ठहराने के लिए करते हैं:[23] "मैं इस पाप से लड़ रहा हूं जो मुझ पर हावी हो रहा है; परन्तु कोई बात नहीं क्योंकि पौलुस की भी यही समस्या थी। यदि यह पौलुस के लिए अच्छा था तो मेरे लिए भी अच्छा ही होगा।" इस प्रकार से सोचने वाले लोग हमारे वचन पाठ की 24 और 25 आयतों की उपेक्षा करते हैं। पौलुस के लिए पराजय "अच्छी" नहीं *थी*। पराजय ने उसे प्रभु की ओर मोड़ दिया, जिसने उसे *विजय* दी (देखें रोमियों 8:37)।

विलियम बार्कले ने कई मूल्यवान सबक सुझाए हैं, जो हमें रोमियों 7:14-25 के लिए लेने चाहिए:[24]

- *ज्ञान अकेला अपर्याप्त है।* ज्ञान आवश्यक है (हम अज्ञानता को कभी प्रोत्साहित नहीं करना चाहेंगे); परन्तु ज्ञान अपने आप में पाप से ग्रस्त संसार का उपचार नहीं कर सकता। कइयों का मानना है कि "जब लोगों को अच्छा ज्ञान हो जाएगा तो वे बेहतर करेंगे"; परन्तु पौलुस की समस्या ज्ञान की कमी की नहीं थी। वह जानता था कि उसे क्या करना चाहिए और उसका जीवन कैसा होना चाहिए, परन्तु वह ऐसा *कर* नहीं पाया।
- *अकेला दृढ़ संकल्प अपर्याप्त है।* बेहतर करने का संकल्प लेने और फिर उसे पूरा करने का प्रयास करने में कोई बुराई नहीं है, परन्तु इससे सब समस्याएं सुलझ नहीं जाएंगी। कइयों का विश्वास है कि लोगों को, असफल होने का एकमात्र कारण यह है कि "उन्होंने पूरी कोशिश नहीं की।" पौलुस अच्छा करना चाहता था और उसने अच्छा करने की जी तोड़ कोशिश की, परन्तु फिर भी असफल रहा।

- *अकेला रोग निदान करना अपर्याप्त है।* पौलुस को मालूम था कि उसे "मृत्यु की इस देह से छुटकारा" आवश्यक है, परन्तु वह इसका कुछ नहीं कर सकता था। सही रोग निदान अपने आप में बेकार था ज़्योंकि उसे इलाज की आवश्यकता थी।[25]

निश्चय ही रोमियों 7:14-25 का सबसे महत्वपूर्ण सबक यह है कि जब हम पौलुस की तरह निराशा से भरे हों, तो भी आशा है! हमारी आशा मसीह के द्वारा परमेश्वर में मिलती है! इस बात को कभी न भूलें कि बाइबल की सबसे बुरी खबर के बाद सबसे अच्छी खबर आती है!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

जब आप इस प्रवचन का इस्तेमाल करें तो आपको अपने सुनने वालों को बताना चाहिए कि उसके साथ संगति में कैसे आना है जिसने पौलुस को आशा दी (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

यह और पिछला पाठ एक ही प्रस्तुति के दो भाग हैं। आप चाहें तो प्रत्येक पाठ को छोटा करके उनसे इस संगठन के अनुसार "मानवीय दुविधा" शीर्षक से एक पाठ में मिला सकते हैं:

I. समस्या समझाई गई (रोमियों 7:14-25)
   - क. मुज़्य विवाद
   - ख. मनुष्यजाति की स्थिति
   - ग. एक अर्थपूर्ण टिप्पणी

II. पद्य की समीक्षा (रोमियों 7:14-25)
   - क. अभिवादन और स्थिति (आयत 14)
   - ख. उलझन और अंगीकार (आयतें 15-17)
   - ग. चुनौती और चिंता (आयतें 18-20)
   - घ. निष्कर्ष और झगड़ा (आयतें 21-23)
   - ङ. एक पुकार और भरोसा (आयतें 24, 25)

टिप्पणियां

[1]क्रेज, ब्रायन लारसन, सज़्पा., *कन्टैज़्प्रेरी इलस्ट्रेशंस फ़ॉर प्रीचर्स, टीचर्स, एण्ड राइटर्स* (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुज़्स, 1996), 184 में उद्धृत। [2]जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जुडसोनिया, आरकैंसा, सी. 2001 में दिए गए एक प्रवचन में ग्लेन पेस द्वारा उद्धृत। [3]"करता" के लिए आयत 15 में तीन यूनानी शज़्द अलग-अलग इस्तेमाल किए गए हैं। प्रत्येक शज़्द थोड़े से अलग अर्थ वाला है परन्तु उनका इस्तेमाल किसी न किसी रूप में एक-दूसरे के स्थान पर किया गया है। [4]हमारे वचनपाठ में प्रथम श्रेणी के सशर्त वाज़्य हैं जिनमें "यदि" का अर्थ मुज़्यतया "ज़्योंकि" है। [5]डज़्ल्यू ई.वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट जूनि. *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोज़िस्टरी डिज़्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 274. [6]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ंट एण्ड एफ. विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 559; जेज़्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिज़्सन पब्लिशर्स, 1992), 192. [7]कहीं और पौलुस ने

भीतरी/बाहरी रूपक का इस्तेमाल मसीही संदर्भ में गैर-मसीही संदर्भ के विपरीत किया (देखें 2 कुरिन्थियों 4:16; इफिसियों 3:16)। [8]जे. डब्ल्यू. मैज़्गोरमन, "रोमन्स 7 वन्स मोर," *साउथवेस्टर्न जरनल ऑफ़ थियोलॉजी* (फाल 1976): 41. [9]फिलिप्पियों 2:13 कहता है कि *परमेश्वर* हमारी "इच्छा करने और काम करने दोनों में" सहायता कर सकता है। [10]जो लोग यह कहते हैं कि रोमियों 7:14-25 परिपज़्व मसीही के आत्मिक संघर्षों की बात करता था वह यह ज़ोर देते हैं कि गैर-मसीही व्यज़्ति परमेश्वर की व्यवस्था के लिए ऐसा प्रेम कभी नहीं दिखाएगा। परन्तु विवेकी *यहूदी* (जैसे पौलुस ने किया) करेगा और कर सकता था।

[11]कई लोग आयत 23 की अलग-अलग *तीन* "व्यवस्थाओं" को देखते हैं, परन्तु पहली और तीसरी दोनों व्यवस्थाओं को उसके शरीर के "अंगों में" होने की बात कहीं गई है। इसलिए वे सज़्भवतया एक ही हैं। [12]हाफोर्ड ई. लज़्कॉक, *प्रीचिंग वेल्यूस इन द एपिस्टल ऑफ पॉल,* अंक. 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 45 में उद्धृत। [13]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लज़्बॉक, टैज़्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 108. [14]बाउर, 811. [15]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901: रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 614. [16]आज की अमेरिकी संस्कृति में किसी व्यज़्ति की बात करने के लिए जो असफल हो चुका हो अपमानजनक शज़्द "लूज़र!" है। [17]कइयों का मानना है कि इस आयत में "मृत्यु" शारीरिक मृत्यु को कहा गया है। [18]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू दि रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 147. [19]आयत 24 में "इस मृत्यु की देह" की व्याज़्या "शारीरिक मृत्यु के लिए नियुज़्त देह" करने वाले 7:25 के पहले भाग को शारीरिक पुनरुत्थान के लिए मानते हैं (देखें रोमियों 8:11; 1 कुरिन्थियों 15:53-57)। सज़्भवतया 7:25क को ऐसी सीमित व्याज़्या से नहीं मिलाया जाना चाहिए। [20]जेज़्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (आस्टिन, टैज़्सस: फर्म फाउंडेशन पज़्लिशिंग हाउस, 1973), 275.

[21]मैकगोरमन, 34. [22]जॉन. आर. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 214. [23]यह विचार डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 246 और जिम हिल्टन, *जस्ट डाइंग टू लाइव* (कलमज़ू, मिशिगन: मास्टर'स प्रैस, 1976), 78 पर आधारित है। [24]अगली टिप्पणियां बार्कले एण्ड एज़्सपेंडेड से ली गई हैं। (विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 100.) [25]जिम मैज़्गुइगन ने लिखा, "हमारी शिक्षा और प्रचार की बहुतायत रोग निदान है। जितना महत्वपूर्ण यह है, उस हिसाब से इसका उज़र पूरा नहीं है। कैंसर का रोग निदान कैंसर ही रहता है और उसे पहचान से अधिक की आवश्यकता है" (जिम मैज़्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू दि बाइबल सीरीज़ [लज़्बॉक, टैज़्सस: मोन्टेज़्स पज़्लिशिंग कं., 1982], 228)।